साहित्य अकादेमी
रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग
नई दिल्ली 110 001

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्योत्सव का तीसरा दिन

चंद्रशेखर धर्माधिकारी का संवत्सर व्याख्यान

उपयोगिता और लालच में अंतर करना होगा – चंद्रशेखर धर्माधिकारी

नई दिल्ली, 17 फ़रवरी 2016 । साहित्य अकादेमी के वार्षिक आयोजन 'साहित्योत्सव' के तीसरे दिन का मुख्य आकर्षण प्रख्यात न्यायविद्, स्वतंत्रता सेनानी और प्रसिद्ध गाँधी विचारक चंद्रशेखर धर्माधिकारी द्वारा दिया गया 'संवत्सर व्याख्यान' रहा, जिसका शीर्षक था : 'हम अपने आपको फिर से देखें, आँखों का चश्मा हटाकर'। अपने व्याख्यान से पहले उन्होंने अपनी कमजोर हिंदी का हवाला देते हुए कहा कि ''मेरी मातृभाषा मराठी है और हिंदी मैंने सामान्यजनों के बोलचाल से सीखी है। इसलिए मैं अपनी हिंदी को 'हिराठी' यानी हिंदी–मराठी मिश्रित भाषा कहता हूँ। अपने हिंदी प्रेम के लिए उन्होंने गाँधी के साथ बचपन में बिताए 10 साल भी जिम्मेदार बताया। उन्होंने कहा कि भारत की आज़ादी वाले दिन बी. वी.सी. के लिए एक इंटरव्यू में कहे उनके शब्द, ''दुनिया को कह दो कि आज से गाँधी अंग्रेज़ी नहीं जानता'' का उन पर ऐसा गहरा असर पड़ा कि न्यायमूर्ति बनने के बाद भी न्यायालयीन कामकाज या अंतर्राष्ट्रीय समारोह के सिवा, अन्य जगह में हिंदी ही बोलता हूँ। इसलिए यहाँ भी यह क्रम जारी रखा है।

साहित्य और साहित्यकारों के प्रति अपने भाव प्रकट करते हुए उन्होंने कहा कि मानवनिष्ठा और सामान्यजनों के प्रति आसीम विश्वास यही तो साहित्यकारों की विशेषता है। आज हम आत्मकेंद्रित बन रहे हैं। ऐसे में बच्चों का भावी जीवन सुखकर हो इसका 'ब्ल्यू–प्रिंट' या नक़्शा, क्या साहित्य और साहित्यकार प्रस्तुत कर सकेंगे ? मेरी दृष्टि में यह आज की चुनौती है। संस्कार करने नहीं पड़ते, वे हुआ करते हैं। वातावरण और रहन–सहन से, साथ ही पठन और मनन से। माँ–बाप को फ़ुरसत नहीं। हर घर में दूरदर्शन के रूप में एक 'बेबी सिटर' है, जिसके सामने माँ–बाप बच्चों को बैठाकर बाहर घूमने चले जाते हैं। ऐसे समय, बच्चों की जिज्ञासा जगानेवाला तथा पढ़ने में रुचिकर साहित्य रचा जाना, यह युग की आवश्यकता है। इस समय हम सब भारतीय नहीं बल्कि अपने–अपने प्रदेशों के होकर रह गए हैं। अभी हमें जमीनें चाहिए उसमें रहने वाले लोग नहीं। इसीलिए सच्ची भारतीयता कहीं नज़र नहीं आती है। हमने साहित्यकारों को भी प्रदेश के हिसाब से बाँट दिया है। तुलसीदास उत्तर भारत के होकर रह गए हैं। आज़ादी के बाद जिस भारतीयता के लिए हम सब लड़ रहे थे वह भारतीयता क्या अब ख़त्म हो गई है ? मुझे अभी भी साहित्यकारों पर भरोसा है कि वे इस

माहौल को बदल सकते हैं। हमारा समाज उपयोगिता और लालच में अंतर करना भूल गया है। हम कृत्रिम दिमाग़ और कृत्रिम लालच की दुनिया में जी रहे हैं।

अंत में जो उनका कार्यक्षेत्र रहा है, उस न्यायप्रणाली के बारे में बोलते हुए उन्होंने कहा कि हमारी न्याय व्यवस्था अंग्रेजों से ली गई और गवाहों पर आधारित है और आज के समय में कोई भी सौ टका सच्चा नहीं है। व्यक्ति की प्रतिष्ठा, सत्ता, संपत्ति, धर्म, जाति, संप्रदाय निरपेक्ष हो और उसकी प्रतिष्ठा सुरक्षित रहे, यह न्यायपालिका का दायित्व है। लेकिन आज दुर्भाग्य से हर राजनीतिक दल और हम स्वयं भी, ऐसी स्वतंत्र न्यायपालिका चाहते हैं, जिसे, 'सिर्फ़ उस राजनीति पक्ष या हमारे पक्ष में ही निर्णय देने की ही संपूर्ण स्वतंत्रता होगी।' और ऐसी भावना रखनेवाली न्यायपालिका नहीं होगी तो संसदीय लोकतंत्र प्राणवान् नहीं हो सकता; यह लोकतंत्र का अंतिम सत्य है। व्यक्ति के मूलभूत अधिकारों की सुरक्षा करना, यह न्यायपालिका का जैसा दायित्व है।

धर्माधिकारी के व्याख्यान के बाद व्याख्यान की एक मुद्रित पुस्तिका विमोचन साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी और अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार द्वारा किया गया। व्याख्यान के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने साहित्य अकादेमी के संवत्सर व्याख्यान की परंपरा के बारे में विस्तार से बताया और चंद्रशेखर धर्माधिकारी का परिचय प्रस्तुत किया।

आज सुबह पुरस्कृत लेखकों के साथ 'लेखक सम्मिलन' और 24 भारतीय भाषाओं के युवा लेखकों के साथ 'युवा साहिती' कार्यक्रम किया गया, जिसका उद्घाटन व्याख्यान प्रख्यात भारतीय अंग्रेज़ी लेखिका सुकृता पॉल कुमार ने दिया।